गांधी और दीनदयाल

अनिल कुमार
असि. प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग
श्री बजरंग पी. जी. कॉलेज,सिकंदरपुर, बलिया, उत्तर प्रदेश
Email-anil.bhu06@gmail.com

सारांश

महात्मा गांधी जी और पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी दोनों लोग ही देश के प्रमुख आर्थिक विचारक रहे है। गांधी जी और दीनदयाल जी दोनों लोग देश में कृषि विकास, ग्रामीण विकास, स्वदेशी, आत्मनिर्भरता, विकेंद्रीकरण जैसे आर्थिक मुद्दों पर अपने विचार दिए।

गांधी जी और दीनदयाल जी के आर्थिक विचारों में कहीं समानता है तो कहीं असमानता।

स्वदेशी, आत्मनिर्भरता और विकेंद्रीकरण पर विचार लगभग समान ही है। गांधी जी के विचार अहिंसा और ट्रस्टीशिप के अवधारणा पर आधारित है तो दीनदयाल जी के विचार एकात्म मानववाद व अंत्योदय पर आधारित है। लेकिन दोनों लोगों के विचारों का एक ही उद्देश्य था देश के लोगों की खुशहाली, समृद्धि और देश का आर्थिक रूप से सर्वांगीण विकास।

आज भी दोनों लोगों के स्वदेशी, आत्मनिर्भता, विकेंद्रीकरण जैसे आर्थिक विचार प्रासंगिक है।

मुख्य शब्द:
महात्मा गांधी, पंडित दीनदयाल उपाध्याय, स्वदेशी, आत्मनिर्भरता, विकेंद्रीकरण, एकात्म मानववाद, ट्रस्टीशिप, ग्रामीण विकास, आर्थिक विकास

महात्मा गांधी और पंडित दीनदयाल उपाध्याय दोनों ने भारतीय आर्थिक चिंतन को एक नयी दृष्टिकोण दी। भारत के लिए न तो पूंजीवाद सही था और न ही समाजवाद।

भारत के लिए स्वदेशी, आत्मनिर्भरता और विकेंद्रीकरण जैसी अवधारणाएं सही है।

हमारे देश का आर्थिक चिंतन देशानुकूल हो, युगानुकूल हो, आर्थिक विचारों का भारतीयकरण हो।

महात्मा गांधी के प्रमुख आर्थिक विचार-

गांधी जी मुख्य रूप से स्वदेशी व आत्मनिर्भरता, विकेंद्रीकरण, ग्रामीण विकास और ट्रस्टीशिप के सिद्धांत पर अपने आर्थिक विचार दिए।

गांधी जी मानना था कि हमे अपने देश मे निर्मित वस्तुओं का ही प्रयोग करना चाहिए। विदेशी वस्तुओं का उपयोग नही करना चाहिए।

स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग करके ही अपने देश को हम आत्मनिर्भर बना सकता है, देश का आर्थिक विकास कर सकते है और राजनीतिक रूप से देश को मजबूत बना सकता है।

गांधी जी का स्पष्ट मानना था कि "देश की आत्मा गांवों में ही बसती है।"

अर्थात गांव का विकास किये बिना देश का विकास संभव ही नही है। गांधी जी के अनुसार कृषि का विकास करके, गांवों में ही छोटे, लघु और कुटीर उद्योगों को स्थापित करके और गांवों को राजनीतिक रूप से सशक्त बना के ग्रमीण विकास किया जा सकता है।

गांधी जी अर्थव्यवस्था के विकेंद्रीकरण के पक्षधर थे। गांधी जी केंद्रीकृत अर्थव्यवस्था के घोर विरोधी थे। उनका मानना था कि शक्ति और धन के केंद्रीकरण से समाज में हिंसा, अन्याय और आर्थिक असमानता उत्पन्न होता है।

गांधी जी विकेंद्रीकरण के अंतर्गत छोटे, लघु और कुटीर उद्योगों के विकास की बात करते है। गांधी जी बड़े उद्योगों के विकास के स्थान पर छोटे, लघु और कुटीर उद्योगों के विकास की बात करते है, इनके अधिक से अधिक स्थापना की बात करते है।

विकेंद्रीकरण का मतलब ही है अर्थव्यवस्था में अधिक से अधिक छोटे, लघु और कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देना।

गांधी जी के अनुसार जितना अधिक विकेंद्रीकरण होगा उतना ही अधिक लोगों को रोजगार मिलेगा, आय बढ़ेगा, जीवन स्तर में सुधार होगा, खुशहाली बढ़ेगी, ग्रामीण विकास होगा, देश का आर्थिक विकास होगा।

ट्रस्टीशिप का सिद्धांत के अंतर्गत गांधी जी का मानना है कि पूंजीपति या धनी व्यक्ति, अपने आप को समाज का ट्रस्टी मानना चाहिए। अपने संपत्ति का मालिक न मानकर अपने आपको उसका रखवाला मानना चाहिए और अपनी संपत्ति का उपयोग समाज की भलाई के लिए करना चाहिए। इससे समाज के लोगों में खुशहाली भी होगी और समानता भी आएगी।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के प्रमुख आर्थिक विचार-

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का आर्थिक विचार या विचार दर्शन 'एकात्म मानववाद' के नाम से जाना जाता है। दीनदयाल जी ने विभिन्न आर्थिक मुद्दों पर अपने आर्थिक विचार दिए।

दीनदयाल जी मुख्य रूप से कृषि विकास, ग्रामीण विकास, स्वदेशी, आत्मनिर्भरता, विकेंद्रीकरण और अंत्योदय पर अपने आर्थिक विचार दिए है जो बहुत ही महत्वपूर्ण है।

दीनदयाल जी कृषि विकास के लिए सिंचाई की समुचित व्यवस्था अर्थात छोटी छोटी परियोजनाओं द्वारा सिंचाई की बात की।

उर्वरक के रूप में गोबर की खाद के प्रयोग की बात किए।

भू-स्वामी खेती की बात किए और सबसे बड़ी बात कि वे उचित कृषि उपज मूल्य की वकालत किये।

कृषि उपज मूल्य के तहत उनका मानना था कि उचित कृषि उपज मूल्य दिए जाने से किसानों का एक तरफ आय बढ़ेगा तो दूसरी तरफ किसान औद्योगिक वस्तुओं का मांग भी तो करेंगे। अर्थात एक ही साथ कृषि और उद्योग का परस्पर विकास होगा जिससे देश का आर्थिक विकास होगा।

दीनदयाल जी कृषि का विकास करके, विकेंद्रीकरण और नियोजन द्वारा ग्रामीण विकास की बात करते है।

दीनदयाल जी स्वदेशी व आत्मनिर्भरता की बात करते है। वे देशानुकूल, युगानुकूल की बात करते है।

दीनदयाल जी अर्थव्यवस्था के विकेंद्रीकरण के पक्षधर थे। दीनदयाल जी का मानना है कि देश मे बड़े उद्योग भी रहे और साथ ही छोटे, लघु एवं कुटीर उद्योगों को भी अधिक से अधिक बढ़ावा दिया जाना चाहिए। जिससे कम पूंजी होते हुए भी अधिक से अधिक लोगों को रोजगार देकर उनके आय को बढ़ाकर विकास के मुख्य धारा से जोड़ा जा सकता है।

दीनदयाल जी अंत्योदय में यकीन रखते थे। उनके अनुसार अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति का भी विकास होना चाहिए।

दीनदयाल जी के अनुसार आर्थिक विकास का मुख्य उद्देश्य आत्मनिर्भरता और विकेंद्रीकरण होना चाहिए, जिससे समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति का भी उत्थान हो अर्थात अंत्योदय हो।

आर्थिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन-

समानता

गांधी जी और दीनदयाल जी के आर्थिक विचारों में कुछ समानता भी है जो इस प्रकार है-

गांधी जी और दीनदयाल जी दोनों विचारक आत्मनिर्भरता एवं आर्थिक विकेंद्रीकरण पर जोर देते हैं।

स्वदेशी की अवधारणा दोनों लोगों के आर्थिक दर्शन में प्रमुख है।

असमानता

इनके विचारों में कुछ असमानताएं भी देखने को मिलती है जो इस प्रकार है-

गांधी जी का आर्थिक विचार अहिंसा, ट्रस्टीशिप सिद्धांत पर आधारित है, जबकि दीनदयाल जी का आर्थिक दर्शन 'एकात्म मानववाद' पर आधारित है, जो मानव को समग्र अथवा एकात्म रूप में देखता है और उनका समग्र विकास की बात करता है।

गांधी जी समाज में आर्थिक समानता के स्थापना पर जोर देते थे, जबकि दीनदयाल जी का ध्यान अंत्योदय पर था।

गांधी जी छोटे, लघु व कुटीर उद्योगों के पक्षधर थे और साधारण तकनीक के प्रयोग की बात करते थे। जबकि दीनदयाल जी छोटे, लघु व कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देने के साथ ही बड़े उद्योगों को भी महत्व देते थे। इसके साथ ही दीनदयाल जी आधुनिक तकनीको के प्रयोग का भी समर्थन करते थे लेकिन उनका मानना था, इन तकनीकों को देशानुकूल बनाकर प्रयोग करना चाहिए।

निष्कर्ष-

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि देश के लोगों के विकास एवं खुशहाली, देश के आर्थिक विकास हेतु गांधी जी और दीनदयाल जी दोनों लोगों का आर्थिक विचार बहुत महत्वपूर्ण है।

स्वदेशी, आत्मनिर्भरता और विकेंद्रीकरण जैसे विचार आज भी प्रासंगिक है।

गांधी जी और दीनदयाल जी दोनों के आर्थिक विचार भारतीय अर्थव्यवस्था में आत्मनिर्भरता, विकेंद्रीकरण और स्वदेशी के महत्व को उजागर करते हैं। इनके विचारों का तुलनात्मक अध्ययन वर्तमान आर्थिक चुनौतियों का समाधान प्रस्तुत करने में सक्षम है।

संदर्भ-

1. गांधी, एम. के.(1909). हिन्द स्वराज. नवजीवन प्रकाशन.

2. गांधी, एम. के. (1947). मेरे सपनों का भारत.

3. गांधी, एम. के. (1929). आत्मकथा: सत्य के साथ मेरे प्रयोगों की कहानी.

4. www.mkgandhi.org

5. aryavartsvs.org.in

6. उपाध्याय, दीनदयाल (1958). भारतीय अर्थनीति विकास की एक दिशा. लखनऊ: राष्ट्रधर्म प्रकाशन.

7. उपाध्याय, दीनदयाल (1972). राष्ट्रचिंतन. लखनऊ: राष्ट्रधर्म प्रकाशन.

8. उपाध्याय, दीनदयाल (1979). राष्ट्रजीवन की दिशा. लखनऊ: लोकहित प्रकाशन.

9. उपाध्याय, दीनदयाल. एकात्म मानववाद. नई दिल्ली: भारतीय जनसंघ कार्यालय.

10. उपाध्याय, दीनदयाल (1991). एकात्म मानव दर्शन (दीनदयाल उपाध्याय, माधव सदाशिव गोलवलकर, दत्तोपंत ठेंगड़ी, तृतीय संस्करण). नई दिल्ली: सुरुचि प्रकाशन.

11. ठेंगड़ी, दत्तोपंत (1991). पंडित दीनदयाल उपाध्याय: व्यक्ति दर्शन खंड- 1: तत्व जिज्ञासा. नई दिल्ली: सुरुचि प्रकाशन.

12. कुलकर्णी, शरद अनन्त (2014). पंडित दीनदयाल उपाध्याय: विचार दर्शन खंड-4: एकात्म अर्थनीति. नई दिल्ली: सुरुचि प्रकाशन.

13. पाठक, विनोद चंद्र (2009). पंडित दीनदयाल उपाध्याय का राजनीतिक चिन्तन. नई दिल्ली: प्रकाशक- आर. डी. पाण्डेय, सत्यम पब्लिशिंग हाऊस.

14. गुप्त, बजरंग लाल (2014). दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म अर्थ चिंतन. मीडिया-विमर्श.